क्वाड साझेदारी और समुद्री सुरक्षा



हाल ही में मनीला में आयोजित क्वाड देशों के नेताओं का शिखर सम्मेलन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि दो साल के लंबे अंतराल के बाद आखिरकार यह सम्मेलन आयोजित हुआ। डोनाल्ड ट्रंप की व्हाइट हाउस में वापसी के बाद से ही क्वाड समूह के भविष्य को लेकर कई सवाल उठने लगे थे।

इस पृष्ठभूमि में मनीला शिखर सम्मेलन ने क्वाड की खोई हुई चमक को कुछ सीमा तक वापस लौटाया है।

- क्वाड ने इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम सर्विलांस कोलेबोरेशन नामक एक नई पहल शुरू की है। इसका उद्देश्य समुद्री सूचनाओं के आदान-प्रदान और समुद्री गतिविधियों पर निगरानी रखने की क्षमता को मजबूत करना है। इस पहल के तहत क्वाड के चारों देश अगले वर्ष पहली बार संयुक्त सैन्य अभ्यास करेंगे, जिसमें समुद्री निगरानी करने वाले विमानों को तैनात किया जाएगा।
- नाविकों की सुरक्षा पर तात्कालिक महत्व की बात सीफेर्स सेफ्टी इनिशिएटिव का प्रस्ताव रखा जाना है। यह विचार वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक है।

अक्सर देश इस बात को भूल जाते हैं कि समुद्री व्यापार वैश्विक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। दुनिया में मात्रा के हिसाब से होने वाले कुल व्यापार का 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा समुद्री मार्गों से परिवहन किया जाता है। अतः समुद्री नाविकों की सुरक्षा और समुद्री मार्गों पर निर्बाध आवागमन सुनिश्चित करना सभी देशों की सांझी जिम्मेदारी है। लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध और अमेरिका-ईरान युद्ध ने इस व्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया है।

भारत दुनिया में नाविक उपलब्ध कराने वाले सबसे बड़े देशों में से एक है। इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय पहल न केवल समुद्री परिवहन की सुरक्षा को मजबूत करेगी, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा के नए रास्ते भी खोल सकती है।

'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में प्रकाशित संपादकीय पर आधारित। 19/11/26